श्री अनंतनाथ जिन पूजन

स्थापना

(आडिल्ल छन्द)

अनंत ज्ञानी ज्योतिर्मय जिनराय जी।
कर्म अंत कर मोक्ष गये शिवराय जी।।
करुणाकर स्वीकारो प्रभु वंदन मेरा।
आ गया चरणों में मेटो भव फेरा।।1।।
शक्ति जब तक मुझमें दर ना छोड़ूँगा।
जैसी आज्ञा प्रभु आपकी मानूँगा।।
आह्वानन करता हूँ नाथ आ जाओं।
भावों के उच्चासन प्रभु समा जाओ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(ज्ञानोदय छंद)

अनादि काल से जनम मरण किया प्रभो।
इक बार भी सम्यक् मरण नहीं किया विभो।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
जन्म मृत्यु नाश हेतु अर्चना करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल मलय सुगंधित चंदन है चढ़ाया।
नश्वर सुखों में रुल रहा दुख महान है।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
संसार ताप नाश हेतु अर्चना करू।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय प्रभु अनंतनाथ सुख निधान हैं।
नश्वर सुखों में रुल रहा दुख महान हैं।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
अखण्ड पद की प्राप्ति हेतु अर्चना करूँ ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये निर्वपामीति स्वाहा।

निष्काम आप नाम है न कोई काम है।
न नाम है न धाम है निज में विराम है।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
अखण्ड ब्रह्मचर्य हेतु अर्चना करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आनंद सरोवर निमग्न आप हैं प्रभो।
तृष्णा के जाल में फँसा उबार लो प्रभो।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
क्षुधा व्यथा के नाश हेतु अर्चना करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान भानु का उदय हुआ प्रभो तुम्हें।
दिखता नहीं अज्ञान अंधकार में हमें।।

अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
ज्ञान के प्रकाश हेतु अर्चना करूँ।।6।।
ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
द्रव्य कर्म भाव कर्म नाश कर दिये।
ध्यान लीन हो गये निज दर्श पा लिये।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
अष्ट कर्म मेटने को अर्चना करूँ।।।7।।
ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
भौतिक सुखों की कामना से धर्म भी किया।
अतएव क्रिया मात्र से शिव शर्म ना लिया।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
मोक्ष लक्ष्मी प्राप्त हेतु अर्चना करूँ।।8।।
ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
वसु द्रव्यलेय श्रेष्ठ आत्म द्रव्य मिलाऊँ।
अनंतनाथ के चरण में शीघ्र चढ़ाऊँ।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
सिद्ध पद के हेतु अर्चना करूँ।।..9।।
ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(सखी छंद)

कार्तिक कृष्णा एकम् को, आये सपने माता को।
पुष्पोत्तर तजकर आये, सुर नर मुनि जन हर्षाये।।1।।
ऊँ हीं कार्तिककृष्ण प्रतिपदायां गर्भमंगलमंडिताय ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ज्येष्ठा वदी बारस आई, सुर गृह गूँजी शहनाई।
नृप सिंहसेन हर्षाये, सारी साकेत सजाये ।2।।
ऊँ हीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बजी जन्मोत्सव की बधाई, उल्का गिरने को आई।
तब एक हजार नृप संग में, दीक्षा ली सहेतुक वन में ।।3।।
ऊँ हींज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ज्ब चौत्र अमा काली थी, तब ज्ञान सूर्य लाली थी।
प्रभु समवसरण में राजे, और बारह सभा विराजे।।4।।
ऊँ हीं चौत्रकृष्णअमावस्यायां केवलज्ञानप्राप्ताय ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जब केवलज्ञान हुआ था, उस तिथि में मोक्ष हुआ था।
गिरि शिखर स्वयंभू कूट, प्रभु गये करम से छूट।।5।।
ऊँ हीं चौत्रकृष्णअमावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य

ऊँ हीं अर्हं ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

दोहा

अनंत गुण गण युक्त हे, अनंत जिन भगवंत।
गुणमाला अर्पण करूँ, पा जाऊँ शिवपंथ।1।।
जय-जय चौदहवें तीर्थंकर , अनंतनाथ प्रभु दया निधान।
दे उपदेश भव्य जीवों का, करते आप सदा कल्याण।।

दीक्षा धर सर्वज्ञ हुए जब, जन-जन का उद्धार किया।
रत्नत्रय मय मोक्षमार्ग है, दिव्यध्वनि का सार दिया
तेरह विध चारित्र बताया, दिव्यध्वनि में ज्ञान कराया।।2।।
जीव समास चतुर्दश चौदह, मुख्य मार्गणा बतलाई।
गुणास्थान जीवों के चौदह, परिभाषा भी बतलाई।।
तत्त्वों का श्रद्धान नहीं वह, मिथ्यातम कहलाता है।
उपशम सवमकि से गिरकर ही, सासादन में आता है।।3।।
सम्यक् मिथ्या दही गुड़ मिश्रित, भाव मिश्र गुण में आते।
चौथे अविरत सम्यग्दृष्टि, स्व-पर तत्त्व श्रद्धा लाते।।
त्रस थावर में विरताविरति, पंचम देश विरत कहते।
सं◌ायम सकल प्रगट हो जाता, उसे प्रमत्तविरत करते।।4।।
जहाँ संजवलन मंद उदय हो, अप्रमत्तविरति होते।
अष्टम गुण से ही उपशम औ, क्षपक श्रेणी भी चढ़ जाते।।
कभी पूर्व में प्राप्त हुए ना, वो अपूर्व परिणाम धरे।
नवमाँ है अनिवृत्तिकरण समकालीन भाव अभेद धरे।।5।।
दशम सूक्ष्म सांपराय गुण है, सूक्ष्म लोभ का उदय रहे।
पूर्ण रूप से दबे मोह तो, ग्यारहवाँ गुणथान कहे।।
सकल मोह का क्षय हो जता, क्षीण मोह द्वादश प्यारा।
चार घातिया नाश हुए तो, सयोग केवली गुण न्यारा।।6।।
योग नाश कर चौदहवाँ शुभ, अयोग केवली थान कहा।
कर्म नष्ट कर सिद्धक्षेत्र में, पहुँच गए है सिद्ध महा।।
ज्ञाता दृष्टा रहे जीव तो, राग-द्वेष मिट जाता है।
स्व सन्मुख दृष्टि जो रखता, मोक्ष परम पद पाता है।।7।।
समवसृति में प्रभु आपने, इस विध जो उपदेश दिया।
दिव्यध्वनि सुन लगा मुझे यों, चिदानंद निज देश दिया।।
हर्ष भाव से पुलकित होकर, प्रभु मैंने की है पूजन।
पूजा का सम्यक् फल होवे, कटे हमारे भव बंधन।।8।।

ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

जय जय जिनवर जी, अंनतनाथ जी, भव-भव का संताप हरो।
निज पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।

श्री अनंतनाथ जिन पूजन

स्थापना

(आडिल्ल छन्द)

अनंत ज्ञानी ज्योतिर्मय जिनराय जी।
कर्म अंत कर मोक्ष गये शिवराय जी।।
करुणाकर स्वीकारो प्रभु वंदन मेरा।
आ गया चरणों में मेटो भव फेरा।।1।।
शक्ति जब तक मुझमें दर ना छोड़ूँगा।
जैसी आज्ञा प्रभु आपकी मानूँगा।।
आह्वानन करता हूँ नाथ आ जाओं।
भावों के उच्चासन प्रभु समा जाओ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(ज्ञानोदय छंद)

अनादि काल से जनम मरण किया प्रभो।
इक बार भी सम्यक् मरण नहीं किया विभो।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
जन्म मृत्यु नाश हेतु अर्चना करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल मलय सुगंधित चंदन है चढ़ाया।
नश्वर सुखों में रुल रहा दुख महान है।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
संसार ताप नाश हेतु अर्चना करू।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय प्रभु अनंतनाथ सुख निधान हैं।
नश्वर सुखों में रुल रहा दुख महान हैं।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
अखण्ड पद की प्राप्ति हेतु अर्चना करूँ ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निष्काम आप नाम है न कोई काम है।
न नाम है न धाम है निज में विराम है।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
अखण्ड ब्रह्मचर्य हेतु अर्चना करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आनंद सरोवर निमग्न आप हैं प्रभो।
तृष्णा के जाल में फँसा उबार लो प्रभो।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
क्षुधा व्यथा के नाश हेतु अर्चना करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान भानु का उदय हुआ प्रभो तुम्हें।
दिखता नहीं अज्ञान अंधकार में हमें।।

अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
ज्ञान के प्रकाश हेतु अर्चना करूँ।।6।।
ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
द्रव्य कर्म भाव कर्म नाश कर दिये।
ध्यान लीन हो गये निज दर्श पा लिये।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
अष्ट कर्म मेटने को अर्चना करूँ।।7।।
ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
भौतिक सुखों की कामना से धर्म भी किया।
अतएव क्रिया मात्र से शिव शर्म ना लिया।।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
मोक्ष लक्ष्मी प्राप्त हेतु अर्चना करूँ।।8।।
ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
वसु द्रव्य लेय श्रेष्ठ आत्म द्रव्य मिलाऊँ।
अनंतनाथ के चरण में शीघ्र चढ़ाऊँ।
अनंत ज्ञान हेतु नाथ प्रार्थना करूँ।
सिद्ध पद के हेतु अर्चना करूँ।।9।।
ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(सखी छंद)

कार्तिक कृष्णा एकम् को, आये सपने माता को।
पुष्पोत्तर तजकर आये, सुर नर मुनि जन हर्षाये।।1।।
ऊँ हीं कार्तिककृष्ण प्रतिपदायां गर्भमंगलमंडिताय ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ज्येष्ठा वदी बारस आई, सुर गृह गूँजी शहनाई।
नृप सिंहसेन हर्षाये, सारी साकेत सजाये ।2।।
ऊँ हीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बजी जन्मोत्सव की बधाई, उल्का गिरने को आई।
तब एक हजार नृप संग में, दीक्षा ली सहेतुक वन में ।।3।।
ऊँ हींज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय
ज्ब चौत्र अमा काली थी, तब ज्ञान सूर्य लाली थी।
प्रभु समवसरण में राजे, और बारह सभा विराजे।।4।।
ऊँ हीं चौत्रकृष्णअमावस्यायां केवलज्ञानप्राप्ताय ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जब केवलज्ञान हुआ था, उस तिथि में मोक्ष हुआ था।
गिरि शिखर स्वयंभू कूट, प्रभु गये करम से छूट।।5।।
ऊँ हीं चौत्रकृष्णअमावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य

ऊँ हीं अर्हं ऊँ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

दोहा

अनंत गुण गण युक्त हे, अनंत जिन भगवंत।
गुणमाला अर्पण करूँ, पा जाऊँ शिवपंथ।1।।
जय-जय चौदहवें तीर्थंकर, अनंतनाथ प्रभु दया निधान।
दे उपदेश भव्य जीवों का, करते आप सदा कल्याण।।

दीक्षा धर सर्वज्ञ हुए जब, जन-जन का उद्धार किया।
रत्नत्रय मय मोक्षमार्ग है, दिव्यध्वनि का सार दिया
तेरह विध चारित्र बताया, दिव्यध्वनि में ज्ञान कराया।।2।।
जीव समास चतुर्दश चौदह, मुख्य मार्गणा बतलाई।
गुणास्थान जीवों के चौदह, परिभाषा भी बतलाई।।
तत्त्वों का श्रद्धान नहीं वह, मिथ्यातम कहलाता है।
उपशम सवमकि से गिरकर ही, सासादन में आता है।।3।।
सम्यक् मिथ्या दही गुड़ मिश्रित, भाव मिश्र गुण में आते।
चौथे अविरत सम्यग्दृष्टि, स्व-पर तत्त्व श्रद्धा लाते।।
त्रस थावर में विरताविरति, पंचम देश विरत कहते।
सं◌ायम सकल प्रगट हो जाता, उसे प्रमत्तविरत करते।।4।।
जहाँ संजवलन मंद उदय हो, अप्रमत्तविरति होते।
अष्टम गुण से ही उपशम औ, क्षपक श्रेणी भी चढ़ जाते।।
कभी पूर्व में प्राप्त हुए ना, वो अपूर्व परिणाम धरे।
नवमाँ है अनिवृत्तिकरण समकालीन भाव अभेद धरे।।5।।
दशम सूक्ष्म सांपराय गुण है, सूक्ष्म लोभ का उदय रहे।
पूर्ण रूप से दबे मोह तो, ग्यारहवाँ गुणथान कहे।।
सकल मोह का क्षय हो जता, क्षीण मोह द्वादश प्यारा।
चार घातिया नाश हुए तो, सयोग केवली गुण न्यारा।।6।।
योग नाश कर चौदहवाँ शुभ, अयोग केवली थान कहा।
कर्म नष्ट कर सिद्धक्षेत्र में, पहुँच गए है सिद्ध महा।।
ज्ञाता दृष्टा रहे जीव तो, राग-द्वेष मिट जाता है।
स्व सन्मुख दृष्टि जो रखता, मोक्ष परम पद पाता है।।7।।
समवसृति में प्रभु आपने, इस विध जो उपदेश दिया।
दिव्यध्वनि सुन लगा मुझे यों, चिदानंद निज देश दिया।।
हर्ष भाव से पुलकित होकर, प्रभु मैंने की है पूजन।
पूजा का सम्यक् फल होवे, कटे हमारे भव बंधन।।8।।

ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

जय जय जिनवर जी, अंनतनाथ जी, भव-भव का संताप हरो।
निज पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।